© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 3 | Print ISSN : 2395-6011 | Online ISSN : 2395-602X
Themed Section: Education

पौराणिक आख्यान : एक परिचय

डॉ. रेखा गुप्ता
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत)
बी.एम. मेमोरियल महाविद्यालय, किशुनपुर माडरमऊ,
अम्बेडकर नगर (यू.पी.)

शोध आलेख सार – पौराणिक कथा में देवी–देवताओं के समावेश के साथ–साथ उसमें धार्मिकता की भावना भी होनी चाहिए, इसके बिना वह देव–कथा भले ही बन जाये, 'धर्मगाथा' नहीं बन सकती। साथ ही मिथ कथा और पुराकथा हमारी संस्कृति को सजीव रखती है। इन दोनों कथाओं में कल्पना, अद्भुत घटनाओं का वर्णन और विश्वास आदि सभी तत्त्वों का विवेचन रहता है और दोनों का आधार परम्परा है अगर मिथ प्राग् ऐतिहासिक है तो पुराकथा ऐतिहासिक रोमांसों की अभिव्यक्ति करती है। पौराणिक आख्यान प्राचीन होते हुए भी नवीनता से युक्त होती है तथा सभ्यता के बदलते हुए सामाजिक प्रतिमानों में रूप परिवर्तन कर लिया है।

मुख्य शब्द– पौराणिक, कथा, देवी–देवता, संस्कृति, मानव, प्रकृति, वाङ्मय।

मानव की सहज कुतूहल–प्रवृत्ति की पूर्ति का एक प्रमुख साधन आख्यान है। मनुष्य जिस प्रकृतिक वातावरण में रहता है, उसका मन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सदैव प्रभावित होता रहता है। प्राकृतिक पदार्थ इस प्रकार मनुष्य में अतुल कल्पनाओं की उत्पत्ति की प्रेरणा देकर उसके अनुभवों को पुष्ट करते हैं। प्रकृति अनन्त रहस्यों का भण्डार है। प्राचीन काल से इसी कारण प्रकृतिक के अतिरिक्त देवी–देवताओं और ऋषिओं के साहसपूर्ण कार्यों ने उन मनुष्यों के मन को अत्याधिक प्रभावित किया है, शायद इसीलिए विद्धानों ने आश्चर्यजनकपूर्ण वातावरण की सृष्टि की थी।

भारतीय वाङ्मय में पुराकथा के बीज प्राचीन काल से ही मिल जाते है। वैदिक सहितायें हमारी सबसे प्राचीन साहित्यिक कृतियाँ है। पौराणिक आख्यानों के बारे में विस्तृत रूप से जानने के लिए सर्वप्रथम उसके स्वरूप को जानना आवश्यक है।

भारतीय वाङ्मय में *पुराण* शब्द से एक विशिष्ट प्रकार के साहित्य का बोध होता है। अमरकोश में पुराण को प्राचीनार्थ में स्वीकार किया है।[प] वेद[पप] और पुराणों[पपप] में भी इसी अर्थ की पुष्टि की गई है। इस अर्थ के द्वारा वेदों की अपेक्षा पुराण अत्यधिक प्राचीन माने गये है। यह तो निर्विवाद है कि वेदों से भी पूर्व पुराणगत सामग्री विद्यमान थी भले ही उसका स्वरूप इस समय उपलब्ध पुराणों से भिन्न हो। ऐसा प्रतीत होता है कि वेदों से पूर्व पुराण ग्रन्थ–विशेष या शास्त्र–विशेष न होकर अलिखित लोकवृत्त के रूप में वर्तमान रहे होंगे और वैदिक युग में वेदव्यास ने समाज में प्रचलित और सूत्रों द्वारा सुरक्षित इस मौलिक लोकवृत्त का संकलन करके उसे पुराण संहिता के नाम से अभिहित

किया होगा।[पअ] अथर्ववेद[अ], उपनिषदों[अप], सूत्रग्रन्थों[अपप] और स्मृतिग्रन्थों[अपपप] तक आते–आते पुराण एक विशिष्ट विधा के रूप में माने जाने लगे। वेदव्यास के संकलन के समय पुराणों में मुख्यतः सृष्टि–वर्णन, प्रलय–वर्णन और वंश–वंशानुचरितों का ही उल्लेख था किन्तु कालान्तर में अनेक धार्मिक तथा साम्प्रदायिक विषय भी उनमें जुड़ने लगे और पुराणों का महत्त्व धार्मिक क्षेत्र में अधिक बढ़ गया।

वर्तमान काल में पुराण शब्द 'अष्टादश–ग्रन्थों' में आकर रूढ़ हो गया, जिसमें सृष्टि के प्रारम्भिक उद्‌भव के विवरण से लेकर जीवन–व्यापी अनेक विषयों का समीकरण हो चुका है। आज पुराणों को केवल प्राचीन गाथाएं कहना उनकी क्षेत्रीय व्यापकता को कम करना है। आज का पुराण–साहित्य प्राचीन और नवीन का मिश्रित रूप है। उसमें एक ओर सृष्टि की उत्पत्ति से सम्बन्धित अतीत की घटनाएँ और राजाओं के चरित्र–वर्णन विद्यमान हैं तो दूसरी ओर चिरन्तर प्रलय का उल्लेख भी हुआ है। अतः पुराणों में सृष्टि की उत्पत्ति काल से लेकर प्रलय पर्यन्त होने वाले राजाओं–महाराजाओं के वंश तथा चरित्र–वर्णन, युग–निरूपण, काल–निरूपण, ग्रह–उपग्रह–निरूपण, भूगोल, खगोल, ज्योतिष, रत्नविज्ञान, आयुर्वेद, नरक–स्वर्ग–वर्णन, साम्प्रदायिक विधि–विधान, आचार–व्यवहार से सम्बन्धित विभिन्न कथा–कथाओं तथा अन्य आख्यानों–उपाख्यानों की रोचक सामग्री समाविष्ट है, जिनको देखकर कहा जा सकता है कि पुराण मात्र धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु ऐतिहासिक, भौगोलिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। भारतीय जनजीवन का आदर्श और संस्कृति उनमें रोचक ढंग से विवृत्त हुई है और विभिन्न विधाओं के समावेश से कोश रूप में स्मरण किये जा सकते है।[पग]

पुराकथाओं का अस्तित्व वेदों से पहले साहित्य के रूप में नहीं लोकवार्ता के रूप में अवश्य था। 'पुराणों' में पुराण के बारें में निम्नलिखित प्रकार से कहा गया है–

1. 'ब्रह्मा ने पहले पुराण को स्मरण किया, फिर वेदों का प्रकाश किया'।[ग]
2. 'सभी शास्त्रों के निर्माण से पूर्व ब्रह्मा ने पुराण का स्मरण किया'।[गप]

इन कथनों का यही आशय है कि कुछ पौराणिक आख्यान लोकानुश्रुति के रूप में वैदिक साहित्य की रचना के पूर्व भी उपस्थित थे।

पौराणिक आख्यानों के सम्बन्ध में जानने से पहले यह जानना अत्याधिक आवश्यक है कि पौराणिक आख्यान कैसे बना है–

सर्वप्रथम कोशकार वामन शिवराम की व्युत्पत्ति इस प्रकार है–

पौराणिक : (वि॰) (स्त्री॰) (पुराण+ठक्) 1– भूतकाल का, प्राचीन, 2– पुराणों से संबद्ध या उससे प्राप्त अतीत काल के उपाख्यानों का ज्ञाता, पुराणों का सुविज्ञ बाह्मण, पुराणों का पाठक (जन साधारण में बैठकर), 3– पुराण विद्, पौराणिक कथा जानने वाला व्यक्ति।[गपप]

आख्यानम् : (आ+ख्या+ल्युट्) 1– बोलना, घोषणा करना, जतलाना, समाचार, 2– किसी पुरानी कहानी की ओर निर्देश करना–आख्यानं पूर्व वृत्तोक्ति : साहित्य दर्पण (उदाहरण–देशः सोऽयमराति शोणित जलैर्यस्मिन् ह्रदाः पूरिताः वेणीसंहार 3.31), 3–कथा, कहानी विशेष रूप से काल्पनिक या पौराणिक उपाख्यान–अप्सराः पुरूरवसं चकम् इत्याख्यानाविद आचक्षते।[गपपप]

प्रसद्धि वैयाकरण 'महर्षि पाणिनी' के शब्दों में–'अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः।'[गपअ]

'मालिनोव्यस्की' के विचार में 'पुराकथा' का प्रमुख कार्य परम्परा को सशक्त बनाना तथा प्राचीन घटनाओं के उच्चतर और श्रेष्ठतर अति प्राकृतिक सत्य में उनका उद्‌गम खोजकर उन्हें महत्तर मूल्य और गौरव से मण्डित करना है।[गअ] 'रूथ बेनेडिक्ट' के अनुसार, "पुराकथाए" धर्म तन्त्र की कुंजी होती हैं उसके अभाव में धार्मिक 'व्यवहारों' को समझा ही नहीं जा सकता। पुराकथाएं जिस समाज में जन्म लेती हैं और दोहराई जाती हैं, उसका उनकी सत्यता में पूरा विश्वास होता है।"[गअप]

"पौराणिक विश्वासों के भीतर दन्त कथाओं, वंशानुक्रम और इतिहास को भी समेट लिया गया है। वस्तुत : 'पुराण' शब्द का प्रयोग बहुत व्यापक अर्थ में होता है और बहुत से लोग तो उसे दन्त कथाओं और इतिहास का समानार्थी भी मानते हैं।" 'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' ने भी इसे इसी रूप में माना है।[गअपप]

"पौराणिक आख्यान यदि प्रकृति सम्बन्धी जिज्ञासामूलक अनुभूतियों के काल्पनिक, धार्मिक और कथात्मक या समाधान हैं तो दन्त कथायें (Legends) जीवन की ठोस अनुभूतियों का प्रतीक है किन्तु यह अन्तर इतना अस्पष्ट है कि सहज ही दोनों को एक ही मान लिया गया है। वस्तुतः संसार की सभी जातियों के प्राचीनतम साहित्य और इतिहास में पौराणिक और दन्त कथाओं के बीच कोई स्पष्ट विभाजक रेखा नहीं दिखलाई पड़ती। प्रायः निजन्धरी कथाओं के पात्र पौराणिक देवता बन गये हैं और पौराणिक देवता दन्त कथाओं के नायक मान लिये गये हैं। पौराणिक कथाओं की तरह ही दन्त आख्यानों का भी विकास हुआ है। वे किसी एक व्यक्ति या एक युग की देन नहीं हैं और इस विकास के पीछे भी वही कारण रहे हैं, जो पौराणिक कथाओं के विकास के मूल में थे। भारतीय और पौराणिक कथाओं और दन्त आख्यानों का प्रारम्भिक स्वरूप वेदों से ही दिखलाई देता है।"[गअपपप]

विभिन्न विद्वानों ने अपनी पुस्तकों में पुराकथा का स्वरूप निश्चित करते हुए इसे विभिन्न परिभाषाओं में बांधने की चेष्टा की है और इसमें विभिन्न तत्त्वों की महत्ता को स्वीकार किया है। पुराकथा के लिए आख्यान, दन्त कथा, गाथा अथवा निजन्धरी कथा आदि शब्द प्रचलित हैं। अंग्रेजी में पुराकथा के लिए मिथ, लीजेन्ड तथा फोकलोर आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

पौराणिक आख्यान के लिए अंग्रेजी में *'मिथ'* या *'माइथालॉजी'* शब्द प्रचलित हैं। *'मिथ'* शब्द का अर्थ जहाँ देवताओं एवं वीरों की प्राचीन परम्परागत गाथा है, जो किसी तथ्य या प्राकृतिक सिद्धान्त की व्याख्या प्रस्तुत करती है, वहाँ उसका अर्थ मिथ्या या कपोलकल्पित भी होता है।[गपग]

" *'मिथ'* वह कथा है, जो किसी युग में घटित दिखायी गयी हो। इन कथाओं में किसी देश के धार्मिक विश्वास, प्राचीन वीरों, देवी–देवताओं, जनता की अलौकिक तथा अद्‌भुत परम्पराओं तथा सृष्टि–रचना का वर्णन होता है।"[गग]

"मिथ एक पूर्णतः काल्पनिक कथा है, जिसमें अलौकिक पुरुष, घटना सम्मिलित होते हैं तथा कुछ लोक प्रसिद्ध विचार जो कि प्राकृतिक तथा ऐतिहासिक चमत्कार से सम्बन्धित होते है।"[गगप]

"एक कथा, साधारणतः किसी अज्ञात स्त्रोत तथा कम आंशिक सांस्कृतिक, जो प्रत्यक्षतः सत्य घटनाओं से सम्बन्धित हो, जो कुछ अनुसरण सिद्धान्त, प्राकृतिक चमत्कार तथा जो विशेषकर धार्मिक औपचारिक क्रिया कलापों तथा सिद्धान्तों से सम्बन्धित हो।"[गगपप]

"विलियम ट्राय के अनुसार, मिथ ज्ञान की एक प्रकार है। विज्ञान की भांति मिथिक भी आदेशित अनुभवों की एक क्रिया विधि और समुदाय है।"[गगपपप]

रिचर्ड चेज मिथक को परिभाषित करते हुए लिखते हैं, "मिथक दर्शन है, तात्विक और प्रतीकात्मक विचार है, ईश्वरीय ज्ञान है, सिद्धात या संहिता है या विश्वदर्शन है, वह विज्ञान का प्रत्यक्ष विरोधी है, विज्ञान के सिक्के का दूसरा पहलू है।"[गगपअ]

अंग्रेजी शब्द '*लीजेण्ड*' जो लातीनी शब्द से 'Legend' से बना है। हिन्दी में इसे 'निजन्धरी कथा' और पंजाबी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में 'दन्त कथा' कहा जाता है। 'लीजेण्ड' चिरकाल से चली आ रही किसी प्रसिद्ध कथा को कहते है। इसमें इतिहास और कल्पना का मिश्रण पाया जाता है। इन कथाओं की आधार भूमि इतिहास की ठोस घटनाएं होती है, परन्तु लोक कथाकार उस पर अपनी कल्पना का आवरण चढ़ा देते हैं, जिससे उनके वास्तविक रूप को पहचानना कठिन हो जाता है।[गगअ]

"एक अप्रमाणिक अथवा अनइतिहासिक कथा जो पीढ़ी दर पीढ़ी समयानुसार चलती है तथा सामान्यतः इतिहास से सम्बन्धित होती है।"[गगअप]

"पारम्परिक कथा अथवा समूह किसी व्यक्ति विशेष अथवा स्थान के बारे में। पहले ये शब्द किसी संत की जीवनी संकलन का सूचनार्थ था। दन्तकथा लोक कथा की अन्तर्वस्तु सदृश्य होती है। उनमें आलौकिक वस्तुओं का समावेश होता है, पौराणिक कथा साहित्य के आधारभूत तत्त्व, अथवा प्राकृतिक चमत्कार की व्याख्या होती है परन्तु इनमें किसी विशिष्ट स्थान अथवा व्यक्ति का समागम होता है। ये पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे बढ़ते हैं तथा सामान्यतः ऐतिहासिक विचार के तौर पर चलते हैं, ये पूर्णतः सत्य नहीं होते।"[गगअपप]

सामान्य शब्दों में ये किसी समाज की संस्कृति, प्रथा तथा धर्म का भाग है, जो कि प्रचलित परम्परा पर आधारित होता है। ये समुदाय द्वारा मौखिक रूप से अथवा उदारणार्थ प्रस्तुत किया जाता है। फोकलोर में कला, कुशलता, संगीत तथा नृत्य सम्मिलित होते हैं।[गगअपपप]

लोग हमेशा कहानियां सुनाना तथा गाने गाना पसन्द करते हैं। यहां तक कि उन दिनों में भी जब कि पुस्तकें प्रकाशित नहीं होती थीं अथवा नहीं थीं, लोग कहानियां तथा धुने शब्दों से बनाते थे। उनके मित्र उन्हें सुनते थे तथा कई बार उन्हें दिल से याद करने की कोशिश करते थे ताकि वे बाहर जाकर दूसरों का मनोरंजन कर सकें। जैसे–जैसे लोग उन्हें दोहराते वैसे–वैसे इन कहानियों तथा लोक गीतों में परिवर्तन करते जाते ताकि नये सुनने वाले इसकी प्रशंसा कर सकें। नए श्रोता, इन्हें सुनाने के लिए नये मित्रों की खोज में निकल पड़ते थे और वे भी इनमें परिवर्तन करते रहते।

कहानियों तथा गीतों के अनेक बार बदले जाने पर प्रथम कहानीकार तथा गायक को भुला दिया गया। ये सही में नहीं बताया जा सकता कि कोई भी कहानी अथवा गीत किसी एक व्यक्ति के दिमाग की उपज है।[गगपग]

डॉ॰ सत्येन्द्र का मत है कि, "केवल देवी–देवताओं से कोई कहानी धर्म गाथा नहीं हो सकती। कितनी ही लोक–कहानियाँ ऐसी हैं, जिनमें शिव–पार्वती, विष्णु आदि का उल्लेख मिलता है, पर उन्हें धर्म गाथा नहीं कहा जा सकता। किसी तथ्य की व्याख्या करने वाली कहानियों में भी देवी–देवताओं का समावेश होता है पर उन्हें भी सदैव धर्म गाथा नहीं कह सकते। कारण यह है कि धर्म गाथा के लिए केवल यह आवश्यक नहीं है कि उसमें देवी–देवताओं का समावेश हो, यह भी आवश्यकता नहीं कि देवताओं में आस्था हो (यहाँ आस्था से अभिप्राय है कहानी में कहीं हुई बात पर विश्वास करना), किन्तु धर्मगाथा के लिए आवश्यक है कि उक्त दोनों बातों के साथ उसका धार्मिक महात्म्य

भी हो। उसके कहने–सुनने में किसी धार्मिक लाभ की भी भावना हो। किन्तु इन सबसे अधिक महत्त्व का तत्त्व यह है कि धर्मगाथा में देवी–देवताओं का समावेश परम्परिक कथा–अभिप्राय (मोटिफ) के रूप में नहीं होता। धर्म गाथा किसी न किसी देवी–देवता के वृत्त से गुँथी रहती है।"[गगग]

डॉ॰ कृष्ण देव उपाध्याय के मत से, "कोई कथा तब तक 'मिथ' कही जा सकती है जब तक उसके प्रधान पात्र देवी और देवता हैं अथवा इन पात्रों में देवत्व की भावना बनी है। परन्तु, जब ये पात्र देवत्व की कोटि से नीचे उतर कर मनुष्यों की श्रेणी में आ जाते हैं, तब उस कथा को 'लीजेण्ड' कहने लगते है।"[गगगप]

उपर्युक्त विवेचनों और परिभाषाओं पर विचार कर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पौराणिक कथा में देवी–देवताओं के समावेश के साथ–साथ उसमें धार्मिकता की भावना भी होनी चाहिए, इसके बिना वह देव–कथा भले ही बन जाये, 'धर्मगाथा' नहीं बन सकती। साथ ही मिथ कथा और पुराकथा हमारी संस्कृति को सजीव रखती है। इन दोनों कथाओं में कल्पना, अद्‌भुत घटनाओं का वर्णन और विश्वास आदि सभी तत्त्वों का विवेचन रहता है और दोनों का आधार परम्परा है अगर मिथ प्राग् ऐतिहासिक है तो पुराकथा ऐतिहासिक रोमांसों की अभिव्यक्ति करती है। पौराणिक आख्यान प्राचीन होते हुए भी नवीनता से युक्त होती है तथा सभ्यता के बदलते हुए सामाजिक प्रतिमानों में रूप परिवर्तन कर लिया है।

संदर्भ

---

i पुराणे प्रतन प्रत्न पुरातन चिरन्तनाः। अमर सिंह, अमरकोश,तृतीय काण्ड, 3.1.76

ii तं गाथयां पुराण्यां पुनानमम्यनूषत। ऋग्वेद, 9.99.4

iii यस्मात् पुरा हि अनति इदम् पुराणम्। वायु पुराण, अ॰ 1/54.

iv डॉ. मृदुला कोहली पौराणिक आख्यान और आधुनिक हिंदी महाकाव्य, पृ॰ 11.

v यत्र स्कम्भः प्रजनयन् पुराणं व्यवर्तयत्।
एक तदङ्ग स्कम्भस्य पुराणमनुसंविदुः।। अथर्ववेद, 10.7.26.

vi छान्दोग्योपनिषद, 7.1.4.

vii अथ स्वध्यायमधीयते ऋचोंयजूंषि सामान्यथर्वाङ्गिरसो
ब्राह्मणानि कल्पान गाथा नाराशंसी हास पुराणानि हति अमृताहुतिभिः।। आश्वगृह्यसूत्र, 3.3.1.

viii पुराण न्याय मीमांसांधर्मशास्त्रङ्गमिश्रिताः ।
वेदा स्थानानि विद्यानां धर्मस्य चं चतुर्दश।।
याज्ञवल्क्य, याज्ञवल्क्य स्मृति, उपोद्‌घात प्रकरण, श्लोक 3.

ix पौराणिक आख्यान और आधुनिक हिंदी महाकाव्य, पृ॰ 12.

x पुराण सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्माणास्मृतम्। अनन्तरञव वकत्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गता :।।
मत्स्य पुराण, अध्याय 53, श्लोक 3.

xi पुराण सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्र ह्माणास्मृतम्।
पद्य पुराण, (सृष्टि खण्ड), अ॰ 1.45.

xii वामन शिव राम आप्टे, संस्कृत हिंदी कोश, पृ॰ 637.

xiii वही, पृ॰ 139.

xiv पाणिनि, अष्टाध्यायी, 8.2.105.

xv एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, भाग–16, मिथ एण्ड रिचुअल शीर्षक के अन्तर्गत, उद्धृत, पृ॰ 803–804.

[xvi] एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल सांइसिस, मिस्र पर रूथ बेनेडिक्ट का लेख, पृ॰ 118.

[xvii] एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, भाग–19, पृ॰ 128.

[xviii] डॉ. शम्भूनाथ सिंह, हिंदी महाकाव्य का स्वरूप विकास, पृ॰ 28–29.

[xix] चैम्बर्स काम्पैक्ट डिक्शनरी

[xx] मेरियालीच, डिक्शनरी ऑफ फोकलोर, भाग दो, पृ॰ 778

[xxi] द आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी, भाग 10, पृ॰ 177.

[xxii] द न्यू एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, पृ॰ 37.

[xxiii] विलियम ट्राय पार्टिसंज रिव्यू.

[xxiv] रिचर्ड चेज, नोट्स ऑन दी स्टडी ऑफ मिड–ट्वीन्टीथ सैंचुरह क्रिटिसिज्म, पृ॰ 245.

[xxv] कृष्ण देव उपाध्याय, हिंदी साहित्य का इतिहास।

[xxvi] An unauthentic or non-historical story, esp. one handed down by tradition from early times and popularly regarded as historical, द आक्सफाई इग्लिंश डिक्शनरी पृ॰ 806.

[xxvii] ब्रिटेनिका रेडी रिफ्रेन्स एनसाइक्लोपीडिया, पृ॰ 37

[xxviii] In its broadest sense, is the part of the culture, customs and beliefs of a society that is based on popular tradition. It is produced by the community and is usually transmitted orally or by demonstration. Folklore includes arts and skills and music and dance. द एनसाइक्लोपीडिया अमेरिकन, पृ॰ 498

[xxix] कैम्पटन एनसाइक्लोपीडिया एण्ड फैक्ट इन्डेक्स, पृ॰ 291

[xxx] डॉ॰ सत्येन्द्र, मध्ययुगीन हिंदी साहित्य का लोकतात्त्विक अध्ययन, पृ॰ 39

[xxxi] सं॰ श्री राहुल सांकृत्यायन और डॉ॰ कृष्ण देव उपाध्याय, हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, पृ॰ 120